

## श्री सतगुरु के प्रेमी मंजिल से ना घबराना

श्री सतगुरु के प्रेमी मंजिल से ना घबराना,  
दिन रात नाम का तू सुमिरन करते जाना ।

दुनिया के भोग तुझको मंजिल से गिराएंगे  
दुनिया के लोग तुझको दीवाना बताएंगे ।  
बातों में नहीं आना, पग पग बढ़ते जाना,  
श्री सतगुरु के प्रेमी मंजिल से ना घबराना ॥

यह तेरा मुकद्दर था, तुझे पूर्ण संत मिले,  
जीवन की बगिया में भक्ति के फूल खिले ।  
हरी नाम से तुम अपनी झोली भरते जाना  
श्री सतगुरु के प्रेमी मंजिल से ना घबराना ॥

प्रभु रूठे गुरु राखे, गुरु रूठे ठौर नहीं,  
गुरु सेवक का रिश्ता, रिश्ता कोई और नहीं ।  
इस रिश्ते को मनवा मुख्य कर के जाना,  
श्री सतगुरु के प्रेमी मंजिल से ना घबराना ॥

स्वर : [स्वामी भुवनेश्वरी देवी जी महाराज](#)

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1635/title/shree-satguru-ke-premi-manjil-se-na-ghabrana>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |